राजस्थान का ऐतिहासिक स्वरूप

राजस्थान का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। हम आज जिस भू-भाग को राजस्थान के नाम से जानते हैं, उसके अलग-अलग भाग विभिन्न कालों और परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न नामों से जाने जाते रहे हैं, जो निम्न हैं-

1. जांगल प्रदेश

महाभारत काल में वर्तमान जोधपुर के उत्तरी भाग व बीकानेर के क्षेत्र को जांगल प्रदेश कहते थे। वानस्पतिक दृष्टि से जांगल का अर्थ **''वह भू-भाग है जहाँ साधारणतया आकाश साफ रहता है और जहाँ जल और वनस्पति का अभाव हो** तथा **वृक्षों में शमी (खेजड़ी)** और **कैर आदि का आधिक्य हो।''** कुरू व भद्र राज्यों के पड़ोस में होने के कारण इस प्रदेश को **'कुरू जांगला'** और **'भादेय जांगला'** भी कहा जाता था। इस प्रदेश की **राजधानी अहिच्छत्रपुर** थी जिसे हम आज **नागौर** कहते हैं। बीकानेर के राजा इसी जांगलदेश के स्वामी होने के कारण अपने को **जंगलधर बादशाह** कहते थे। बीकानेर राज्य के राज्य चिह्न में **'जय जंगलधर बादशाह'** लिखा मिलता है।

ध्यातव्य रहे-गोपीनाथ शर्मा ने जांगल क्षेत्र में **बीकानेर, जयपुर** व **उत्तरी मारवाड़** को सम्मिलित किया है। साथ ही इनके अनुसार एक समय जांगल देश के विस्तृत भाग में **अन्नतप्रदेश** (सांभर से सीकर तक का क्षेत्र) व **नागौर** (अहिच्छत्रपुर) शामिल थे।

2. मत्स्य प्रदेश

मत्स्य प्रदेश का **सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद** में मिलता है, जहाँ मत्स्य निवासियों व वहाँ के राजा भरतवंशी को **'सुदास का शत्रु'** कहा गया है। इसके बाद मत्स्य प्रदेश का उल्लेख महाभारत में मिलता है जिसकी **राजधानी विराटनगर** (वर्तमान में बैराठ) थी। यहाँ बैराठ में पाण्डवों ने अपना अज्ञातवास बिताया। यहाँ के राजा विराट ने अपनी पुत्री **राजकुमारी उत्तरा का विवाह** अर्जुन के पुत्र **अभिमन्यु** से किया था।

राजा विराट महाभारत के युद्ध में अपने तीन पुत्रों उत्तर, श्वेत और शंख के साथ पाण्डवों की ओर से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ था। आगे चलकर यह प्रदेश **मत्स्य जनपद** बना, जिसमें राजस्थान का पूर्वी भाग (जयपुर, अलवर तथा भरतपुर के मध्यवर्ती भाग) आता था। **संगीताचार्य हरिहर** द्वारा रचित **'नत-मुख'** ग्रन्थ में उल्लेख आता है कि नृत्य की **कत्थक शैली का उद्गम** ईसा पूर्व दूसरी सदी में **मत्स्य देश** में ही हुआ था।

3. शिवी जनपद

सिकन्दर के आक्रमण से भारत के अनेक राज्यों के अस्तित्व और सुरक्षा को गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया था, तो **दक्षिणी पंजाब** की **शिवी जाति** अन्य जातियों के साथ राजस्थान में आई और वर्तमान में उदयपुर (मेवाड़) क्षेत्र में निवास करने लगी। इन्होंने अपनी **राजधानी मध्यमिका** (मज्झमिका) को बनाया, जिसे वर्तमान में हम **नगरी** के नाम से जानते हैं। इसी देश को हम **शिवी देश** भी कहते हैं।

4. मेवाड़

हमें मेवाड़ का प्राचीन नाम **शिवी/कीवी** मिलता है, वर्तमान में हम उसे उदयपुर के नाम से जानते हैं। यहाँ पर मेवाड़ के गुहिल राजवंश की स्थापना से पहले **मेद जनजाति** का आधिपत्य था इसीलिए इसे **'मेदपाट'** भी कहा जाता है मेदपाट को ही **'प्राग्वाट'** कहते हैं। वर्तमान में **मेवाड़ क्षेत्र में उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़** व **शाहपुरा** एवं इनके आसपास के क्षेत्र आते हैं।

5. मारवाड़

राजस्थान का रेतीला भाग **मरुप्रदेश** भी कहलाता है। रामायण काल से पूर्व इस क्षेत्र की भूमि समुद्र में डूबी हुई थी। रामायण के अनुसार इस भू-भाग में स्थित सागर ने भगवान श्रीराम को मार्ग नहीं दिया तो क्रोधित राम ने अपनी बाण से यहाँ के पानी को सुखाकर इसे मरु प्रदेश में प्रणित कर दिया। कालान्तर में यही **मरुप्रदेश 'मारवाड़/मरुवार/धान्व प्रदेश'** कहलाया। इस मरुदेश का उल्लेख हमें महाभारत, ऋग्वेद, रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख तथा पाल लेखों में मिलता है। मारवाड़ के अंतर्गत राजस्थान के **जोधपुर, बाड़मेर, जालौर, नागौर, पाली** जिले मुख्य रूप से सम्मिलित है। **सिरोही** व **किशनगढ़** के कुछ क्षेत्रों को भी मारवाड़ के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है।

6. हाड़ौती प्रदेश

राजस्थान के दक्षिणी-पूर्वी कोने वाले पठारी भाग को हम **हाड़ौती** के नाम से जानते हैं। इस प्रदेश को हाड़ौती नाम इसलिए दिया गया क्योंकि यहाँ पर उस समय **हाड़ावंशी चौहानों का राज्य** था। वर्तमान में हाड़ौती प्रदेश में **बूंदी, कोटा, झालावाड़** और **बारां** जिले शामिल हैं। यहाँ पर बोले जाने वाली बोली को **हाड़ौती बोली** कहा जाता है।

7. ढूँढ़ाड़

वर्तमान जयपुर, दौसा तथा उसका समीपवर्ती प्रदेश ढूँढ़ाड़ कहलाता है। इस प्रदेश को ढूँढ़ाड़ इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यहाँ प्राचीनकाल में **ढूँढ़ नदी** बहती थी। ढूँढ़ नदी प्रवाह क्षेत्र में आने वाला इलाका **ढूँढ़ाड़** कहलाया।

8. वागड़

वर्तमान में वागड़ के अंतर्गत **डूँगरपुर** व **बाँसवाड़ा के क्षेत्र** तथा **प्रतापगढ़ के कुछ भागों** को सम्मिलित किया जाता है। **स्कन्ध पुराण** में माही, सोम व जाखम नदी के प्रवाह क्षेत्र को **कुमारिका खण्ड, बांगुरी प्रदेश** व **नाग खण्ड** कहा गया। यहाँ पर प्राचीनकाल में जंगल थे जिनमें काफी पुष्प लताएँ व वन होने के कारण इसे **'पुष्प क्षेत्र'** तथा जंगली जीवों का प्रदेश होने के कारण इसे **'व्याघ्रवाट'** प्रदेश कहते थे। यहाँ पर जब चालुक्य वंश के राजाओं का अधिकार था तो यह **'लाट प्रदेश'** भी कहलाता था। इस प्रदेश को ऋषि मुनियों ने **'पातालदेश एवं गुप्तप्रदेश'** के नाम से पुकारा।

9. मेवात प्रदेश

राजस्थान का उत्तरी-पूर्वी भाग (वर्तमान अलवर, भरतपुर) **मेवात प्रदेश** कहलाता है। यह मेवात प्रदेश इसलिए कहलाता था क्योंकि यहाँ पर **मेव जाति** (ये पहले हिन्दू थे बाद में इन्होंने मुस्लिम धर्म को स्वीकार कर लिया लेकिन इनके रीति-रिवाज अभी हिन्दुओं जैसे ही हैं), **का बाहुल्य** था।

10. भोमट

(**भोम**-पहाड़ी ढ़ाल + ट-आच्छादित) अर्थात् डूँगरपुर, पूर्वी सिरोही तथा उदयपुर जिले का वह भाग जो पहाड़ी ढ़ालों से आच्छादित है, वह प्रदेश **भोमट** कहलाता है।

11. काँठल

(**काँठ** - किनारा + **अल**-आच्छादित) अर्थात् माही नदी के किनारे स्थित प्रतापगढ़ जिले के भू-भाग को **काँठल** के नाम से जाना जाता है।

12. ऊपरमाल

(**ऊपर**-ऊपर उठा हुआ + **माल**-पठार) अर्थात् भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) से बिजौलिया (भीलवाड़ा) के मध्य ऊपर उठा हुआ पठारी भू-भाग जो कि अत्यधिक उपजाऊ है, **ऊपरमाल** कहलाता है।

13. खैराड़ प्रदेश

महाभारत काल में भीलवाड़ा जिले में स्थित जहाजपुर को **'खैराड़ प्रदेश'** कहा जाता था। यहाँ पर **'खैराड़ी बोली'** बोली जाती थी। इसी जहाजपुर के पास टोंक जिले के मालपुरा क्षेत्र को **'माल खैराड़'** के नाम से जाना जाता है। **यह क्षेत्र प्राचीन रुढ़ियों** तथा **कुरीतियों में अब भी जकड़ा हुआ है।**

14. मेरवाड़ा

मेरू का अर्थ पहाड़ होता है इसी कारण अजमेर के आस-पास का पहाड़ी क्षेत्र **मेरवाड़ा** के नाम से जाना जाता है।

15. शेखावाटी प्रदेश

इस प्रदेश की स्थापना **शेखा कछवाहा** ने आमेर से पृथक होकर की थी। यहाँ पर बोली जाने वाली बोली को **शेखावाटी बोली** तथा इस प्रदेश को **शेखावाटी प्रदेश** कहा जाता है। इस प्रदेश के अन्तर्गत **चुरू, सीकर, झुँझुनूं** जिले आते हैं।

ध्यातव्य रहे :- उदयपुरवाटी **शेखावाटी क्षेत्र** में स्थित है, तो वहीं शेखावाटी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **सन् 1803** में **डब्ल्यू. एन. नार्डन** द्वारा किया गया था।

16. देशहरो

जो प्रदेश सदा हरा-भरा रहता है, उसे **देशहरो** कहते हैं। उदयपुर में स्थित जरगा व रागा पहाड़ी के मध्य सदैव हरे-भरे वृक्षों से आच्छादित रहने के कारण इस प्रदेश को **देशहरो** कहा गया।

17. गिरवा

(**गिर**-पहाड़+ **आवा**-घिरा हुआ) अर्थात् उदयपुर का वह क्षेत्र जो चारों ओर से पहाड़ी क्षेत्रों से घिरा हुआ हो, **गिरवा** कहलाता है।

18. छप्पन का मैदान/छप्पन प्रदेश

प्रतापगढ़ व बाँसवाड़ा जिले के मध्य छप्पन गाँवों अथवा छप्पन नदी नालों का समूह होने के कारण यह प्रदेश **छप्पन का मैदान** कहलाता है।

19. मेवल

(**मेव**-पहाड़ या डूँगर + **अल**-आच्छादित) अर्थात् डूँगरपुर तथा बाँसवाड़ा के मध्य स्थित पहाड़ों से आच्छादित क्षेत्र को **मेवल/देवलिया/मुढ़ोल** कहा जाता है।

20. राठ या अहीरवाट

अलवर जिले की हरियाणा राज्य को स्पर्श करता हुआ मुण्डावर, बहरोड़ व बानसूर का क्षेत्र **राठ या अहीरवाट** के नाम से जाना जाता है।

21. अनन्त गोचर/अनन्त प्रदेश

सांभर से सीकर तक के क्षेत्र को **अनन्त गोचर/अनन्त प्रदेश** कहते हैं।

22. सपादलक्ष

अजमेर, नागौर का क्षेत्र सम्मिलित रूप से **सपादलक्ष** के नाम से जाना जाता है, जिसकी **राजधानी अहिच्छत्रपुर** (वर्तमान नागौर क्षेत्र) थी।

23. अर्बुद व चन्द्रावती

सिरोही व आबू के आस-पास का क्षेत्र **चन्द्रावती** व **अर्बुद प्रदेश** के नाम से जाना जाता है।

24. गोड़वाड़

दक्षिण पूर्वी बाड़मेर, जालौर व पश्चिम सिरोही का क्षेत्र।

25. थली/उत्तरी मरूभूमि

बीकानेर, चुरू का अधिकांश भाग एवं दक्षिणी गंगानगर व हनुमानगढ़ की मरूभूमि।

26. बागड़/बांगड़

पाली, नागौर, सीकर व झुंझुनूं का कुछ भाग।

27. डांग क्षेत्र

धौलपुर, करौली व सवाई माधोपुर के कुछ क्षेत्र।

28. मरू प्रदेश

जांगल प्रदेश का रेतीला भाग **'मरू प्रदेश'** भी कहलाता है। **मारवाड़ क्षेत्र** के अन्तर्गत जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर तथा कुछ पाली व नागौर जिले का हिस्सा आता है।